अगस्त अंक

अंक - 3

WWW.VITHIKA.ORG

नटराज

वीथिका ई पत्रिका

WWW.VITHIKA.ORG

साहित्य , कला व संस्कृति को समर्पित

वीथिका

संपादक मंडल

अर्चना उपाध्याय	चित्रा मोहन	सुमित उपाध्याय
प्रधान संपादक	मुख्य सलाहकार संपादक	प्रबंध संपादक

वीथिका परिवार

श्री मनोज कुमार सिंह

श्री अविनाश पाण्डेय

डॉ अखिलेश पाण्डेय

जय श्री

डॉ शिवमूरत यादव

उज्जवल उपाध्याय

अश्विनी तिवारी

अर्चिता उपाध्याय

रजनीकांत तिवारी

संपादकीय समिति

डॉ मोहम्मद ज़ियाउल्लाह

डॉ धनञ्जय शर्मा

डॉ सुधांशु लाल

एड. सत्यप्रकाश सिंह

विनोद कोष्टी

श्री नन्दलाल शर्मा

ग्राफिक व कला संपादक
पूजा मद्धेशिया

कवर फोटो आभार : पूजा मद्धेशिया

संरक्षक
यशिका फाउंडेशन, मऊ

www.vithika.org

वीथिका ई -पत्रिका

UDYAM-UP 55 0010534

vithikaportal@gmail.com

आपकी गलियां

अंक 03 अगस्त 2023

अपनी बात 04

साहित्यकार : नमिता राकेश
05

रूस युक्रेन युद्ध 08

शिव जी का डमरू व गंगा जी
का नृत्य 12

प्रकृति व मनुष्य : कार्टून चित्र 15

रंगमंच व व्यक्तित्व विकास 16

हम याद बहुत आयेंगे 17

रेप इज़ सरप्राइज सेक्स : व्यंग्य 21

कुफरी यात्रा 22

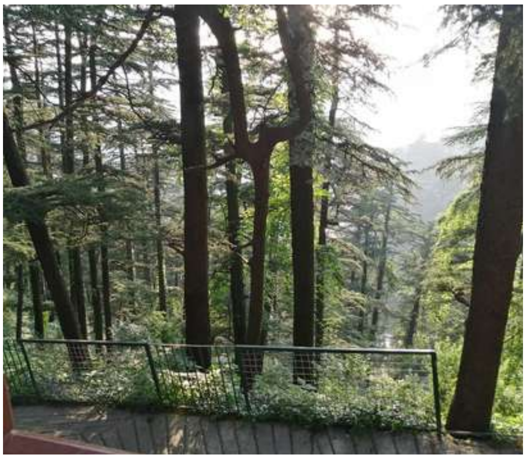

रसोईघर : जवे 24

सोंधी मिट्टी 26

कहानी - सुदर्शना 28

अपनी बात

भारतीय दर्शन में शिव का स्थान अति उच्च है । वह सत्य हैं, सत्य होने के कारण वह शिव अर्थात कल्याणकारी हैं, और सबके लिये कल्याणप्रद होते हुये वह सुंदर हैं ।भारत की प्रकृति की शोभा व जन-जन की जीवन देने वाली, विपुल वन धरोहरों की धात्री गंगा, शिव की शोभा बढ़ातीं हैं । अपने चराचर रूप में स्वयं महादेव प्रकृति को धारण कर संतुलन बनाये हुये हैं । शिव के अनेक रूपों में से एक है – नटराज का, यानी कलाओं के राजा, मूर्तिकला, संगीत या चित्रकला हो शिव हमेशा इनके केंद्र में रहे हैं, शिव की नटराज मुद्रा कलाओं का अद्भुत संगम है ।

भारतीय दर्शन के अनुसार इस समूची सृष्टि की सर्जना के केंद्र में सत्यम, शिवम, सुंदरम का ध्येय स्थापित है जहां पूर्णता का भाव अपने अभिन्न रूपाकारों और प्रतिमानों के साथ मौजूद है जो हमारे द्वारा व्यष्टि को समष्टि से जोड़ती है ।

शिव रूपी तत्व सत्य और सौंदर्य को हमारी चेतना में स्थापित करता है

आज जब प्रकृति अपना संतुलन खो रही है, कलाऐं अपने उद्देश्य से भटक सी रही हैं, यह आवश्यक है कि हम महादेव की नटराज मुद्रा के समक्ष विनय भाव से शिष्य बन खड़े हों और देवाधिदेव से कहें, कि वह हमें उन कलाओं से परिपूर्ण करे जो सृजन करें, निर्माण करें व मनुष्य तथा प्रकृति दोनों के लिये कल्याण का सुंदर मार्ग प्रशस्त करे ।

प्रस्तुत अंक में कला व प्रकृति के बीच इसी संतुलन को सामने रख ला रही है आपकी वीथिका

अर्चना उपाध्याय
प्रधान संपादक

www.vithika.org

हिंदी भाषा को एक नयी पहचान देतीं साहित्यकार नमिता राकेश जी

साहित्य जगत में महिला साहित्यकार एवं सुविख्यात कवयित्री नमिता रोकश का नाम किसी पहचान का मोहताज नहीं है। बहुमुखी प्रतिभा की धनी नमिता राकेश की सरकारी नौकरी में एक राजपत्रित अधिकारी के रूप में हिंदी के संवर्धन के लिए उपलब्धियां तो उनकी प्रशासनिक दक्षता को साबित करती हैं, वहीं उन्होंने साहित्य के क्षेत्र में कवयित्री, गजलकारा, गीतकार, निबंधकार, लेखिका और साहित्यकार के रुप में सामाजिक सरोकारों के मुद्दों में समाज, नारी, विडम्बनाएं, शोषक और शोषित, विसंगतियां, मानवीय रिश्तों जैसी समस्याओं के फोकस में अपने रचना संसार को विस्तार देते हुए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी लोकप्रियता हासिल की है। यही नहीं हिंदी, अंग्रेजी, पंजाबी, उर्दू तथा संस्कृत आदि भाषा की ज्ञाता श्रीमती राकेश ने साहित्य साधना के अलावा जहां टीवी सीरियलों, लघु फिल्मों और हिंदी पंजाबी नाटकों में एक अभिनेत्री की भूमिका निभाकर अपनी कला के हुनर का प्रदर्शन किया, वहीं वे टेबल टेनिस जैसे खेल में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर चुकी हैं। केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल में उपनिदेशक(राजभाषा) रही प्रख्यात महिला रचनाकार नमिता राकेश ने हरिभूमि संवाददाता से हुई बातचीत के दौरान प्रशासनिक, साहित्यिक, अभिनय जैसे क्षेत्र के सफर को लेकर कई ऐसे अनछुए पहलुओं को भी उजागर किया है, जिससे साबित होता है कि वे हर क्षेत्र में समाज के सामने एक सकारात्मक विचारधारा को नई दिशा देने में जुटी हैं।

आपका जन्म 09 मार्च को उत्तर प्रदेश के बरेली में एक शिक्षित परिवार में हुआ। उनकी माता श्रीमती शैलबाला उस जमाने में अंग्रेजी विषय से स्नातकोत्तर थी, जब महिलाओं की शिक्षा के बारे में कोई इतना गंभीर नहीं था। वह कविताएं और लेखन करने में एक बहुत ही विदुषी महिला थी, जो बेटी नमिता के लिए भाषण और वाद-विवाद लिखकर उसे हमेशा मंचों के लिए प्रोत्साहित करती थीं। परिवार में एक अच्छा साहित्यिक माहौल होने से नमिता जी को साहित्य विरासत में मिला। यही कारण था कि नमिता जी ने स्कूली शिक्षा के दौरान ही मंचों पर वाद विवाद और भाषणों व अन्य कार्यक्रमों में हमेशा प्रथम स्थान हासिल किया। आपके पिताजी स्टेट बैंक ऑफ इंडिया में अधिकारी थे और उनकी पोस्टिंग अलग राज्यों में रही। यही कारण है कि उनकी अपनी शिक्षा दिल्ली, पंजाब और हरियाणा जैसे विभिन्न राज्यों में पूरी हुई। स्कूली शिक्षा करनाल में हुई। जब पिता की पोस्टिंग पटियाला में हुई तो वह कक्षा सात में थी और पंजाब में पंजाबी विषय अनिवार्य होने के कारण उसे पंजाबी भाषा का ज्ञान हुआ। एमएलएन कॉलेज से बी.ए. और उनकी अंग्रेजी और इतिहास विषय में स्नातकोत्तर की शिक्षा हुई। जबकि भारतीय विद्या मंदिर से बीएड और भारतीय विद्या भवन से जर्नलिज्म किया।

नमिता जी स्कूल व कॉलेज के जमाने से वह विभागीय पत्रिकाओं में हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत और पंजाबी का संपादन करती थी। स्कूल से कालेज तक वह कविताएं लिखने में इतनी परिपक्व हो गई कि उनकी कविताएं और कहानियां पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगी। उनकी कविताओं को मिले पहचान ने उनमें ऐसा आत्मविश्वास पैदा किया कि पत्र व पत्रिकाओं से कविताओं, कहानियों और लेखों की मांग आने लगी। उनके लेखन की तारीफ में पत्र तक आने लगे तो उन्हें अच्छे लेखन के लिए इतना प्रोत्साहन मिला कि धीरे-धीरे ऑल इंडिया रेडियो, डीडी नेशनल और दूसरे राज्यों व शहरों के टीवी चैनल और रेडियों केंद्रों से काव्यपाठ के लिए उन्हें निमंत्रण मिलने लगे और वह टीवी चैनल और रेडियों केंद्रों पर काव्य पाठ के अलावा बतौर एंकर काम करने लगी। उन्हें आवाज के लिए ओडिशन में भी पास कर दिया गया। चूंकि वह अप्रैल 1988 से विभिन्न केंद्रीय मंत्रालयों व विभागों में एक राजपत्रित अधिकारी के रूप में सरकारी सेवा में थी। इसके बावजूद अपने जिम्मेदार पद व गरीमा के बीच रहते हुए साहित्यिक साधना में जुटी रही, जिसके लिए देश-विदेशों में भी उन्होंने मंचों पर काव्य पाठ किया।

सरकारी नौकरी में भी उन्हें समय से काम का निपटान के लिए मंत्रालयों व विभागों से अनेक प्रशस्ति पत्र और पुरस्कार मिले हैं। रेडियो व टीवी के अलावा देश-विदेश के मंचों पर आयोजित कवि सम्मेलनों व मुशायरों में कविताओं और गजलों तथा मंच संचालन को देश के वरिष्ठ और नामी गरामी साहित्यकारों का भी उन्हें हमेशा प्रोत्साहन मिला। पिछले करीब साढ़े तीन दशक से वह हरियाणा साहित्य अकादमी, हरियाणा उर्दू अकादमी, हरियाणा पंजाबी अकादमी के निमंत्रण पर काव्य पाठ कर रही हैं और सरकार व गैर सरकारी संस्थाओं के निमंत्रण पर भी वह देश के विभिन्न राज्यों में कविता पाठ करती आ रही है। इस साहित्यिक सफर में उसे समग्र लेखन व काव्य पाठ पर विभिन्न सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं से अनेकानेक प्रतिष्ठित पुरस्कार और सम्मान भी हासिल हुए।

पुस्तक प्रकाशन

साहित्य क्षेत्र में नमिता राकेश जी ने हिंदी और उर्दू के अलाव पंजाबी भाषा में करीब तीन दर्जन पुस्तकें लिखी है और तीनों भाषाओं की पुस्तकों को पुरस्कृत भी किया गया है। उनके लेखन में कविता, गीत, कहानियां, ग़ज़ल, लघु कथाएं, हाइकु, लेख, संस्मरण उनकी कृतियों का हिस्सा है। उनका लिखा एक उपन्यास विदेश में प्रकाशित हुआ है। उनकी समकालीन कवयित्रियां: लोकप्रिय कविताएं नामक पुस्तक सुर्खियों में हैं, जिसमें उन्होंने मुक्त छंद-छंद मुक्त कविताओं व गजलों के अलावा दोहा और गीत का समावेश भी किया है। नमिता राकेश के व्यक्तित्व और कृतित्व पर कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के छात्र संजय अद्याना द्वारा शोध कार्य भी किया है।

पुरस्कार व सम्मान

हरियाणा साहित्य अकादमी ने सुप्रसिद्ध कवयित्री नमिता राकेश को साल 2021 के लिए श्रेष्ठ महिला रचनाकार सम्मान से अलंकृत किया है। इनमें प्रमुख रुप से संसद भवन के केंद्रीय कक्ष में राष्ट्रभाषा गौरव सम्मान, संसद का राष्ट्रीय शिखर सम्मान, राष्ट्रीय स्त्री शक्ति सम्मान, राष्ट्रीय सहित्य भूषण सम्मान, ग्लोबल लाइफ टाइम एचीवमेंट अवार्ड, वूमन अचीवर्स अवार्ड, शान-ए-हिंदुस्तान अवार्ड, केंद्रीय गृह मंत्री माननीय श्री राजनाथ सिह द्वारा " महादेवी वर्मा सम्मान" 2015, लेखक सम्मान, उर्दू गजल किताब के लिए हरियाणा उर्दू अकादमी का पुस्तक सम्मान, हिंदी सेवी सम्मान, साहित्याराधन सम्मान, काव्य सुधा सम्मान, समाज गौरव सम्मान, राष्ट्र संत अकादमी महाराज राष्ट्रीय सम्मान, सुभद्रा कुमार चौहान सम्मान जैसे देश विदेश में मिले सैकड़ो पुरस्कार व सम्मान नमिता के नाम है। नेपाल में गजल विद्या के लिए उन्हें परिकल्पना ब्लॉगर सम्मान से भी नवाजा जा चुका है। उन्होंने भारत सरकार की ओर से विश्व हिंदी सम्मेलन में मॉरिशस और सिंगापुर में भी भागीदारी की है।

वहीं 34 साल की सरकारी सेवा में उन्हें सरकारी विभागों में अनेक प्रशस्ति पत्र मिले हैं। इनमें जहां सीआईएसएफ महानिदेशक का वह प्रशस्ति पत्र और सम्मान भी शामिल है, जिसमें उन्होंने सीआईएसएफ के स्वर्ण जयंती वर्ष में बनी यूट्यूब फिल्म की पटकथा लिखी और उनके शब्दोंको सुपर स्टार अमिताभ बच्चन ने अपनी आवाज़ दी। वहीं काव्यात्मक विज्ञापन के लिए आयकर महानिदेशक का प्रशस्ति पत्र और सीआईएसएफ के महानिदेशक का राजभाषा निरीक्षण के लिए दिया गया प्रशस्ति पत्र भी शामिल है। इसी प्रकार केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो से वह रजत पदक हासिल कर चुकी हैं। खेलकूद में उन्हें टेबल टेनिस में वह अनेक प्रतियोगिताओं में पदक व ट्राफी से भी सम्मानित किया जा चुका है।

नमिता राकेश को भोपाल में राष्ट्रीय शिखर सम्मान- निर्दलीय समाचार पत्र समूह सह प्रकाशन के स्वर्ण जयंती समारोह में वरिष्ठ पत्रकार श्री कैलाश आदमी जी, श्री खंडवेकर जी ने वरिष्ठ साहित्यकार, नमिता राकेश, उपनिदेशक, गृह मंत्रालय, भारत सरकार को अति विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित किया। इस अवसर पर विश्व विख्यात सुश्री मेधा पाटकर, प्रो. संजय द्विवेदी जी एवं अन्य मंचासीन विद्वत जन की उपस्थिति में नमिता राकेश जी को राष्ट्रीय शिक्षा गौरव शिखर सम्मान से विभूषित किया गया। देशभर से पधारे लगभग पचास साहित्यकारों को भी विभिन्न सम्मान प्रदान किये गए। दो दिन चले इस समारोह के अवसर पर भाषा,साहित्य, शब्दावली और प्रशासनिक विषयों पर नमिता राकेश के उद्बोधन को खासा पसंद किया गया।

रूस-यूक्रेन युद्ध : अतीत, वर्तमान व भविष्य

डॉ सुधांशु लाल

इतिहास का झरोखा

रूस-यूक्रेन युद्ध वर्तमान समय की सबसे महत्वपूर्ण और चर्चित अंतर्राष्ट्रीय घटना है। हममें से अधिकांश लोग युद्ध और उसके दिन-प्रतिदिन की घटनाओं के बारे में टेलीविजन और मीडिया के अन्य माध्यमों के सहारे जानते हैं | किसी भी घटना को समझने के लिए हमें उसकी पृष्ठभूमि और इतिहास को जानना होगा। इसे समझे बिना हम इस मुद्दे को पूरी तरह या ठीक-ठीक नहीं समझ पाएंगे।

लगभग 17 मिलियन वर्ग किमी की जमीन के साथ रूस क्षेत्रफल की दृष्टि से संसार का सबसे बड़ा देश है, जिसमें यूरोप से लेकर एशिया के बड़े हिस्से तक की भूमि शामिल है। यूक्रेन पूर्वी यूरोप के महत्वपूर्ण देशों में से एक है। हालाँकि, 1991 में सोवियत संघ के विघटन से पहले, यूक्रेन, रूस और अन्य 13 राज्यों के रूप में सोवियत संघ का हिस्सा था। सूत्रों का कहना है कि वह यूक्रेन ही था जिसने सबसे पहले रूस और बेलारूस के साथ सोवियत संघ से अलग होने की आवाज उठाई।

यूक्रेन सोवियत संघ का सबसे विकसित हिस्सा था, अधिकांश परमाणु संयंत्र, हथियार का उत्पादन और तोपखाने और अन्य भारी उद्योग सोवियत संघ द्वारा इसी हिस्से में स्थापित किए गए थे। यूक्रेन, बेलारूस और रूस सोवियत संघ के सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 75% का योगदान करते थे, परंतु उस समय सोवियत संघ की नीति अविकसित क्षेत्र को पहले विकसित करने की थी, उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, सोवियत संघ सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 75% मध्य एशिया पर खर्च करता था। एशियाई देश और अन्य अविकसित क्षेत्र का विकास उसकी प्राथमिकत थी और इसीलिए बेलारूस पहला देश था जिसने सोवियत संघ से अलग होने की मांग की उसके बाद यूक्रेन और रूस ने, उसके विपरीत मध्य एशियाई देश और अन्य अविकसित देश सोवियत संघ के विघटन के खिलाफ थे। सोवियत संघ एक परिसंघ था और संघ के प्रत्येक राज्य को अपनी विधानसभा में कानूनी रूप से एक प्रस्ताव पारित करके अलग होने का अधिकार था। उस क्रम में सोवियत संघ का विघटन हुआ और वह सोवियत संघ के विघटन के प्रमुख कारणों में से एक था।

अब वर्तमान समय पर आते हैं जब 1991 के विघटन के बाद अंतर्राष्ट्रीय भू-राजनीति में पंद्रह नए राज्य उभरे। प्रत्येक राज्य का अपने अस्तित्व, स्थिरता और विकास का मुद्दा था। अधिकांश राज्यों को अपनी विदेश नीतियों और सुरक्षा मुद्दों का कोई अनुभव नहीं था। राजनीतिक ढांचे के साथ-साथ इन देशों की आर्थिक संरचना भी ध्वस्त हो गई, हालांकि रूस अभी भी सोवियत राज्यों में सबसे मजबूत और सबसे बड़ा था। हालाँकि कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, ताजिकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान और उज्बेकिस्तान जैसे मध्य एशियाई देश अभी भी एक संयुक्त गठबंधन बनना चाहते थे, लेकिन तब तक वोल्गा में बहुत पानी बह चुका था और अब और सोवियत संघ को बनाए रखना संभव नहीं था।

बोरिस येल्तसिन रूस के राष्ट्रपति बने और उनके नेतृत्व में रूस के अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के नए आयाम शुरू हुये । हालाँकि, मध्य एशियाई देशों की प्रयाश से, एक कॉमन वेल्थ ऑफ़ इंडिपेंडेंट स्टेट (CIS) का गठन किया गया था, जिसमें सामूहिक और संयुक्त नीति और नए अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य में नए अस्तित्व का विचार था। हालाँकि CIS, सोवियत संघ, NATO,G7 या G20 जैसे किसी अन्य संगठन के रूप में प्रभावी नहीं हो सका, क्योंकि रूस के पास मध्य एशियाई और पूर्वी यूरोपीय देशों के विकासशील राज्यों का बोझ उठाने के अलावा अन्य प्राथमिकताएँ थीं।

रूस अन्य प्रमुख क्षेत्रीय संगठन जैसे ब्रिक्स (ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका) और शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) का हिस्सा है, हालांकि, मध्य एशियाई देश एससीओ का हिस्सा हैं। सोवियत संघ के पतन के बाद रूस यूरोप में एक कमजोर शक्ति बन गया और खुद को एक शक्ति के रूप में स्थापित करने के लिए रूस को एक मजबूत नेतृत्व की आवश्यकता थी। और इस प्रकार व्लादिमीर पुतिन उभर कर आते हैं। पहले चेचन युद्ध में, बोरिस येल्तसिन के प्रतिनिधि के रूप में पुतिन ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, हालाँकि पहले चेचन युद्ध में रूस की हार हुई, लेकिन

इसने पुतिन को एक महत्वपूर्ण नेता बना दिया और बोरिस येल्तसिन के इस्तीफे के बाद, पुतिन राष्ट्रपति बने और बहुत जल्द दूसरे रुसो-चेचन युद्ध में रूस ने चेचन्या को क्रूरता से हराया और दुनिया को दिखाया कि वह सिर्फ एक पूर्व केजीबी एजेंट नहीं बल्कि एक शक्तिशाली नेता भी है।

अब यूक्रेन और रूस के मुद्दे पर आते हैं, पिछले दशक से पहले यूक्रेन ज्यादातर रूस समर्थक था और नाटो और अन्य यूरोपीय राज्य हमेशा यूक्रेन में रूस समर्थक सरकार की स्थापना में रूस के हस्तक्षेप के मुद्दे को इंगित करते थे। हालाँकि, यूक्रेन में हमेशा ऐसे समूह थे जो रूस विरोधी और यूरोप समर्थक थे और वे नाटो में शामिल होना चाहते थे और यूरोपीय संघ का हिस्सा बनना चाहते थे। जैसे ही यूक्रेन में यूरोप या अमेरिका समर्थक सरकार बनी, यूक्रेन में रूसियों के प्रति भेदभाव की खबरें आने लगीं। क्रीमिया में लगभग 71% आबादी रूसी थी, वहीं डोनेट्स्क या डोनबास क्षेत्र में लगभग 38% आबादी रूसी है और लुहांस्क ओब्लास्ट (क्षेत्र) में लगभग 47% आबादी रूसी है और ये दोनों क्षेत्र इस युद्ध में युद्ध का मैदान बन गए। फरवरी 2014 में क्रीमिया पर रूस द्वारा पहले ही कब्जा कर लिया गया था और रूस का हिस्सा बन गया था। रूस दावा कर रहा है कि वे उनके लोग हैं और वे सिर्फ अपने लोगों की रक्षा कर रहे हैं और इसके लिए उन्होंने इस क्षेत्र पर कब्जा कर लिया है। रूस अपने लोगों के खिलाफ भेदभाव के खिलाफ कार्रवाई के नाम पर इसे सही ठहरा रहा है। दूसरी ओर, यूक्रेन इस कार्रवाई का दावा अपनी संप्रभुता के खिलाफ और अंतरराष्ट्रीय कानून के खिलाफ कर रहा है।

वर्तमान रूस-यूक्रेन युद्ध इतना सरल या सीधा नहीं है, यह सिर्फ क्षेत्र का मुद्दा है बल्कि क्षेत्र में प्रभुत्व का भी मामला है। एक ओर यूक्रेन को नाटो की सदस्यता देकर अमेरिका रूस के दरवाजे पर खुद को बसाना चाहता था, वहीं दूसरी ओर यह हमला अंतरराष्ट्रीय समुदाय को चीन के समर्थन से रूस के बाहुबल का प्रदर्शन है कि संयुक्त राज्य अमेरिका का प्रभुत्व समाप्त हो गया है। यह रूसी कूटनीति की जीत है, क्योंकि इतने सारे आर्थिक प्रतिबंधों के बाद भी रूस युद्ध के एक साल बाद भी पीछे हटने का कोई संकेत दिए बिना युद्ध में है। रूस के दो प्रमुख आर्थिक साझेदार हैं, एक है चीन का जनवादी गणराज्य और दूसरा है भारत। हालाँकि भारत रूस का बहुत बड़ा व्यापारिक भागीदार नहीं है लेकिन रूस से सस्ता पेट्रोलियम खरीदकर भारत अप्रत्यक्ष रूप से रूस की मदद कर रहा है। हालाँकि भारत युद्ध के खिलाफ है और एक गुटनिरपेक्ष नीति अपना रहा है लेकिन यह कार्रवाई रूस के प्रति भारत के झुकाव को दर्शाती है।

अब प्रश्न उठता है कि यदि यह युद्ध जारी रहा तो इस संसार का भविष्य क्या होगा। कई संभावित उत्तर हैं लेकिन सबसे सटीक रूप से तीन परिदृश्य सामने आते हैं । सबसे पहला यह कि रूस डोनेट्स्क और लुहांस्क क्षेत्र पर कब्जा कर ले और अपना क्षेत्र बना ले । उस परिदृश्य में यूक्रेन को अपनी हार स्वीकार करनी होगी और यह न केवल यूक्रेन की हार होगी बल्कि यह यूरोपीय संघ और संयुक्त राष्ट्र की भी हार

होगी। साथ ही यह नाटो की भी हार होगी।
दूसरा परिदृश्य यह है कि, रूस यूक्रेनी क्षेत्र से हट जाता है, संयुक्त राष्ट्र के हस्तक्षेप या भारत और चीन जैसे मित्र राष्ट्रों के सुझाव पर सहमति होने या चरम स्थिति में हम कल्पना कर सकते हैं कि रूस नाटो के समर्थन से यूक्रेन से हार गया । हालाँकि यह संभावना बहुत संभव नहीं है, लेकिन फिर भी हम इस अंत की कल्पना कर सकते हैं।
तीसरा और अंतिम यह है कि विवादित क्षेत्र पर रूस और यूक्रेन के साथ कुछ समझौता हो, रूस इस क्षेत्र को छोड़ने के लिए सहमत हो जाये तथा यूक्रेन इस क्षेत्र को स्वायत्तता और रूसियों को सुरक्षा और विशेष दर्जा प्रदान करे, जिनकी इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण संख्या है। निकट भविष्य में यह सबसे संभावित परिणाम है, क्योंकि युद्ध में शामिल दोनों देशों के लिए यह एक लंबी अवधि तक युद्ध लड़ पाना संभव नहीं है । रूस ने अंतरराष्ट्रीय समुदाय में अपनी ताकत साबित कर दी है और साथ ही यूक्रेन ने भी दिखाया है कि वह बहुत आसानी से आत्मसमर्पण नहीं करने जा रहा है और कूटनीतिक रूप से यूक्रेन ने अपनी ताकत और क्षमता भी दिखा दी है |
खुले तौर पर और गुप्त रूप से यूक्रेन ने यह साबित कर दिया कि नाटो और यूरोपीय संघ के राजनयिक समर्थन के माध्यम से, यह तब तक लड़ने जा रहा है जब तक कि रूस बातचीत की मेज पर नहीं आ जाता। जो दोनों देशों के साथ-साथ पड़ोसी देशों और पूरी दुनिया के लिए फायदेमंद होगा। चूंकि पूरी दुनिया आर्थिक और पर्यावरण की दृष्टि से भौतिक रूप से नहीं तो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इस युद्ध के प्रभाव का सामना कर रही है। उम्मीद है कि यह मामला जल्द ही सुलझ जाएगा और इस क्षेत्र में शांति स्थापित होगी।

शिव जी का डमरू और गंगा जी का नृत्य

लेखिका -
रश्मि धारिणी धरित्री

शिव जी का डमरू सच में बज रहा है , गंगा जी नृत्य कर रही हैं और हिमालय बैठे हैं सर पकड़ के। और मनुष्य??? वो अपने किये धरे के बाद त्राहि माम्! त्राहि माम् पुकार रहा है। और पार्वती जी पहले तो थोड़ा हँसी और अब चिंतित हो कर शिव जी को तिरछी नज़र से देख रही हैं कि हे प्रभु हो गया नाच गाना? तो आइये कथा सुने कि आज का शिव पार्वती संवाद क्या है और क्यों वर्तमान में नये रहस्य खुल रहे हैं

चिंतित पार्वती कह रही हैं, "हे नाथ! अचानक इस भारत भूमि पर उत्तरी क्षेत्र प्रकृति के कोप का क्या कारण है, क्यों मेरी बहने गंगा और यमुना व्यासी मगन हो कर नृत्य कर रही हैं कि जल प्रलय आ गया है। सारा मलबा-मिट्टी हिमालय श्री के घर से बह कर मैदानों में तबाही मचा रहा है? सारा कूड़ा-कचरा बह के घरों में आ रहा है। घर पुल इमारतें सब धराशायी हो रही हैं?

शिव जी बोले "शृणु देवी प्रवक्ष्यामि ! स्मरण करो जब धरती एक दहकता हुआ एक ग्रह मात्र थी। धीरे-धीरे ठंडी हुई और ब्रह्मांड में देवी गंगा जल के बादल का रूप धर के इसके पास से निकली और गुरुत्वाकर्षण से धरती के वायु मंडल में समाहित हो गई। ऐसा अनेको बार हुआ। हाँ ये सच है, धरती पर मौजूद पानी धरती का नहीं है।

फिर वो गरज तड़क के बादल बरसे, धरती और शांत ठंडी होती गयी, निर्मल जल जहाँ रास्ता मिला बहता गया और करोड़ो वर्ष की प्रक्रिया में अपने खुद के रास्ते बना लिए, और नदियों का रूप लिया। इस धरती पे जीवन जन्मा। नाना प्रकार के जीव जंतु वनस्पति करोडो वर्ष की प्रक्रिया में धरती पे आये। और अंत में आया मनुष्य।

बुद्धिमान प्राणी जो जानता था कि जल को नियंत्रण करना कठिन है, वो किसी के रोके ना रुकता। जल जो सागरों महासागरों और धरती के तमाम झीलों, तालाबों नदियों से उठता है वायुमंडल में रहता है और कभी वर्षा, कभी हिमपात, कभी ओले के रूप वापस धरती पे आता है।"

पार्वती जी ने हुँकारी भरी, लेकिन एक नज़र अपने नादान बच्चों पे डाली

शिव जी बोले" हे पार्वती! मैं अपने ही बनाये सृष्टि के नियम नहीं बदल सकता। भौतिकी हो या रासायनिकया जैव प्रक्रिया। तो जल चक्र में जितना नमी वायु में जायेगी वो धरती पे वापस आना ही है। वो नियम है। उसको वन जंगल और पर्वत नियंत्रित करते थे। नियम से तो लगभग 120 दिन वर्षा होनी ही है। हाँ कभी अति वृष्टि, कभी बादल फटने पर ये चक्र अनियंत्रित हो जाता है। कभी 80 दिन सामान्य वर्षा होगी तो 20 दिन जम के पानी बरसेगा। या पूरे चक्र में कम बरसा तो एकदम से आखिर में अपना पूरा पानी बरसा देगा। हमारे बच्चे बहुत बुद्धिमान हो गये हैं। तरह-तरह के विकास के साथ सारी सुविधाएँ भी चाहिए। आराम चाहिए।

अरे मेरे तुम्हारे दर्शन करने हेलिकोप्टर से आता है। भोग विलास भी चाहिए। तमाम प्लास्टिक की बोतलें, पॉलीथीन, कूड़ा आपके पिता जी के घर हिमालय पर आनंद और मौज मस्ती करके वही फेंक आये है।

पार्वती जी थोड़ा सोच में पड़ गयी हैं ।

महादेव बोले, “हे उमा सुनो !

विकास बहुत आवश्यक है, दुर्गम स्थानों में भी विद्यालय, अस्पताल, सड़को की ज़रूरत है। लेकिन अगर संतुलित विकास ना हो तो? मनमाने तरीके से पेड़ जंगल काटे जा रहे हैं। हिमालय जो मिट्टी के पहाड़ हैं, उनको बिना समझे जाने, ज़रूरत से ज्यादा काट दिया जा रहा है। मिट्टी को बांधने वाले जंगल कहाँ गए। वर्षा को नियंत्रित करने वाले पेड़ कहाँ गए। सतत विकास (Sustainable development) को अनदेखा कर दिया गया है। शहरों के विस्तार में कुएँ पाट दिये गये। झील-तालाब पाट दिये गये। जिनसे बारिश का पानी धरती के अंदर जा कर भू गर्भ जल के स्रोतों को पुनः जीवन मिलता था। अब वो जल कहाँ जाये।

विकास किसकी कीमत पर होना चाहिए। जब लोग ही नहीं होंगे तो विकास किसके लिए?

पहाड़ों पर नदियों के पुराने रास्तों में निर्माण कर लिया है। नदी के पुराने तल पे (River bed) पर बिना सोचे घर बना लिए। इनके पूर्वजों ने कभी ऐसा लालच नही किया। वो वनस्पति को, प्रकृति के हर स्रोत को, जल को, नदियों को, वनों को पूजते थे उनका सम्मान करते थे। क्योंकि वो जानते थे कि प्रकृति जब कुपित होगी तो विनाश करेगी। जलवायु परिवर्तन, अति वृष्टि से जो अनियंत्रित जल है वो अपने पुराने रास्तों से बह रहा है। ऊपर से अपने साथ वो सारा प्लास्टिक कूड़ा कचरा ला रहा है जो सैर करने, वास्तविक धर्म भूल कर दिखावा करते समय छोड़ कर आये थे। मनुष्य अपना किया भुगत रहा है।

प्रकृति तो अपने आपको संतुलित कर रही है, स्वयं सफ़ाई कर रही है।

इनका कूड़ा जो भराव क्षेत्र (landfill) । में भर गया था, वही वापस आ रहा है इनके घरों में?

पार्वती जी अपने बच्चों को मिले दंड से दुखी हैं।

“हे नाथ! क्या विपुल जॉय चक्रवात का कोई हाथ नहीं?”

-उमा तुम बहुत भोली हो देवी। तनिक देखो धरती को। इसने वहाँ वर्षा की जहाँ धरती कई वर्षों से प्यासी थी। कष्ट केवल मनुष्य के लिए है। धरती तो संतुलन कर रही है। थोड़ा मोह छोड़ कर निर्विकार भाव से देखो। देखो तमाम भक्त कांवड लेकर मुझे प्रसन्न करने निकले हैं, अपने कान फोड़ू संगीत से, भांग गांजे से, धन का दिखावा कर रहे हैं। जो सचमुच भक्त है वो किनारे निकल रहा है।

सुनो प्रिय अब मुझे भी घबराहट हो रही है। चलो कैलास चल कर छुपा जाए। केदारनाथ, हरिद्वार में तो समाधि नहीं लगा सकता। थोड़ी देर डमरू और बजा लूँ, गंगा को अपनी बहनों के साथ थोड़ा नृत्य करने दो। फिर अपनी जटाओं मे समेट लूँगा। हिमालयराज को भी अपना घाव भरने दो। शीघ्र ही नये वन पनपेंगे। जैव विविधता से फिर सशक्त पारिस्थितिकी तंत्र बनेगा।
आओ चलें

प्रकृति और मनुष्य

कृतिका सिंह प्रस्तुति

कृतिका सिंह जी उभरती हुई कार्टूनिस्ट हैं, जीवन के विविध पक्षों पर आपके सीधे हस्तक्षेप करते कार्टून बहुत लोकप्रिय हैं, आप कृतिका जी को उनके फेसबुक पेज Kritika cartoonist (https://www.facebook.com/cartoonistkritika?mibextid=ZbWKwL) पर फॉलो भी कर सकते हैं

मनुष्य ने प्रकृति का अंधाधुध दोहन किया जिसके कारण प्राकृतिक संतुलन बिगड़ रहा है, व अनेक आपदाएं, ऋतुओं में परिवर्तन हमारे सामने है

रंगमंच एवं व्यक्तित्व विकास

संध्या रस्तोगी
वरिष्ठ रंगकर्मी, भूतपूर्व प्रधानाचार्य,
यशोदा इन्टर कॉलेज, लखनऊ

मैं 5-15 आयुवर्ग के बच्चों की ग्रीष्म कक्षाओं में अंग्रेजी भाषा की कार्यशाला ले रही थी । बाल सुलभ प्रकृति के अनुसार कुछ बच्चे बेहद चपल और निरंकुश थे। इन्हीं बच्चों में एक बच्ची ऐसी थी जिसकी आवाज़ अस्पष्ट थी जिसे बोलने में भी बेहद संकोच होता था । एक ऐसा बच्चा था जो अस्वाभाविक रूप से सभ्य, शिष्ट और अनुशासित था जिसे कुछ भी बोलने से पहले अपनी शारीरिक भाव-भंगिमा की सहायता से एक शुरुआत करनी पड़ती थी । बच्चों के इस असामान्य व्यवहार के फलस्वरूप मैंने निश्चय किया कि केवल अंग्रेजी भाषा की कार्यशाला के बजाय इसे एक नया रंग दिया जाए 'रंगमंच' का।

मैंने अंग्रेजी में ही एक रोचक नाट्य-कथानक तैयार कर के बच्चों को उनकी सामार्थ्य और सीमा के अनुसार अभिनय के माध्यम से एक नई अभिव्यक्ति देने का प्रयास किया। परिणाम बेहद सफल और सुखद था। निरंकुश बच्चे अनुशासनबद्ध होकर कार्य करने लगे। जिस बच्ची की आवाज अस्पष्ट थी उसका संवाद संप्रेषण एक अदभुत आत्मविश्वास से भरा समुचित प्रवाह में था। असामान्य रूप से सभ्य और शिष्ट बच्चा अपने खोल से निकलकर सामान्य बच्चों की तरह व्यवहार करने लगा था उसने नाटक में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके अतिरिक्त सभी बच्चों की स्मरणशक्ति इतनी सशक्त हो गई कि दो दिन में ही हर बच्चे को पूरा नाटक कंठस्थ था। फलस्वरूप प्रदर्शन के पश्चात स्वयं माता-पिता अपने बच्चों के प्रति एक सुखद विस्मय से भरे थे। बच्चों के व्यक्तित्व विकास तथा सशक्त अभिव्यक्ति के लिये जो नाट्य प्रयोग मैंने कार्यशाला में किया उससे बच्चों के मन में अभूतपूर्व उत्साह के साथ आत्मविश्वास की वृद्धि हुई तथा माता-पिता के मन में क्षीण होती हुई आशा एक नये विश्वास और संभावना में बदल गई।

मंच वह स्थान है जहाँ गीत, संगीत, नृत्य, अभिनय जैसे अनेकों रंग निखरे हैं इसीलिये यह रंगमंच है। संगीत और नृत्य व्यक्तित्व के एक विशेष पक्ष गायन तथा तालबद्ध भावभंगिमाओं द्वारा अभिव्यक्ति को उजागर करते हैं तो अभिनय संपूर्ण व्यक्तित्व विकास का ऐसा सशक्त माध्यम है जिसमें समस्त कलाओं का समावेश भी है और संवाद सम्प्रेषण के माध्यम से भाषा शैली का परिमार्जन भी। बाल्यवास्था से ही यदि बच्चों में रंगमंच के संस्कार डाले जायें और उन्हें पठन-पाठन के साथ ही अभिनय की शिक्षा दी जाये तो वे अपनी हिचक संकोच व अकारण हीनभावना जैसी नकारात्मक परिधि को स्वयं ही तोड़कर उससे बाहर निकल सकते हैं। स्वयं को अभिव्यक्त करने के लिये शब्दों व भाषाओं को ढूंढने की आवश्यकता उन्हें नहीं पड़ेगी। भाषायी अभिव्यक्ति हेतु अनावश्यक रूप से शरीर के अंगों का सहारा उन्हें नहीं लेना पड़ेगा।

आज के इस कम्प्यूटरीकृत दौर में जब हमारी भाषा और अभिव्यक्ति का निर्धारण भी कम्प्यूटर ही कर रहा है तब बच्चों के संचार कौशल को सशक्त बनाने का सबसे अच्छा साधन है रंगमंच । आज सर्वत्र उच्च तकनीकी शिक्षा संस्थानों में छात्रों के व्यक्तित्व विकास हेतु सामूहिक चर्चाएं होती हैं तथा संचार कौशल का विधिवत् प्रशिक्षण दिया जाता है किन्तु वो छात्र सबसे अधिक सफल होते हैं जिनमें अभिनय क्षमता के साथ ही अभिव्यक्ति का कौशल भी होता है।

अपने कार्यक्षेत्र तथा जीवन में भी एक कलाकार अपनी रोचक कार्य शैली तथा सशक्त अभिव्यक्ति के कारण आम लोगों से अधिक सफल होता है। अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर मैंने यही निष्कर्ष निकाला है कि बच्चों के सरल, सहज व बाधामुक्त विकास के लिये रंगमंच से बेहतर कोई विधा नहीं है। जरूरी है कि बच्चे स्वाभाविक रूप से सीढ़ी दर सीढ़ी बढ़ते जायें। समझदार हों और सफल होने के साथ-साथ एक बेहतर इंसान बने।

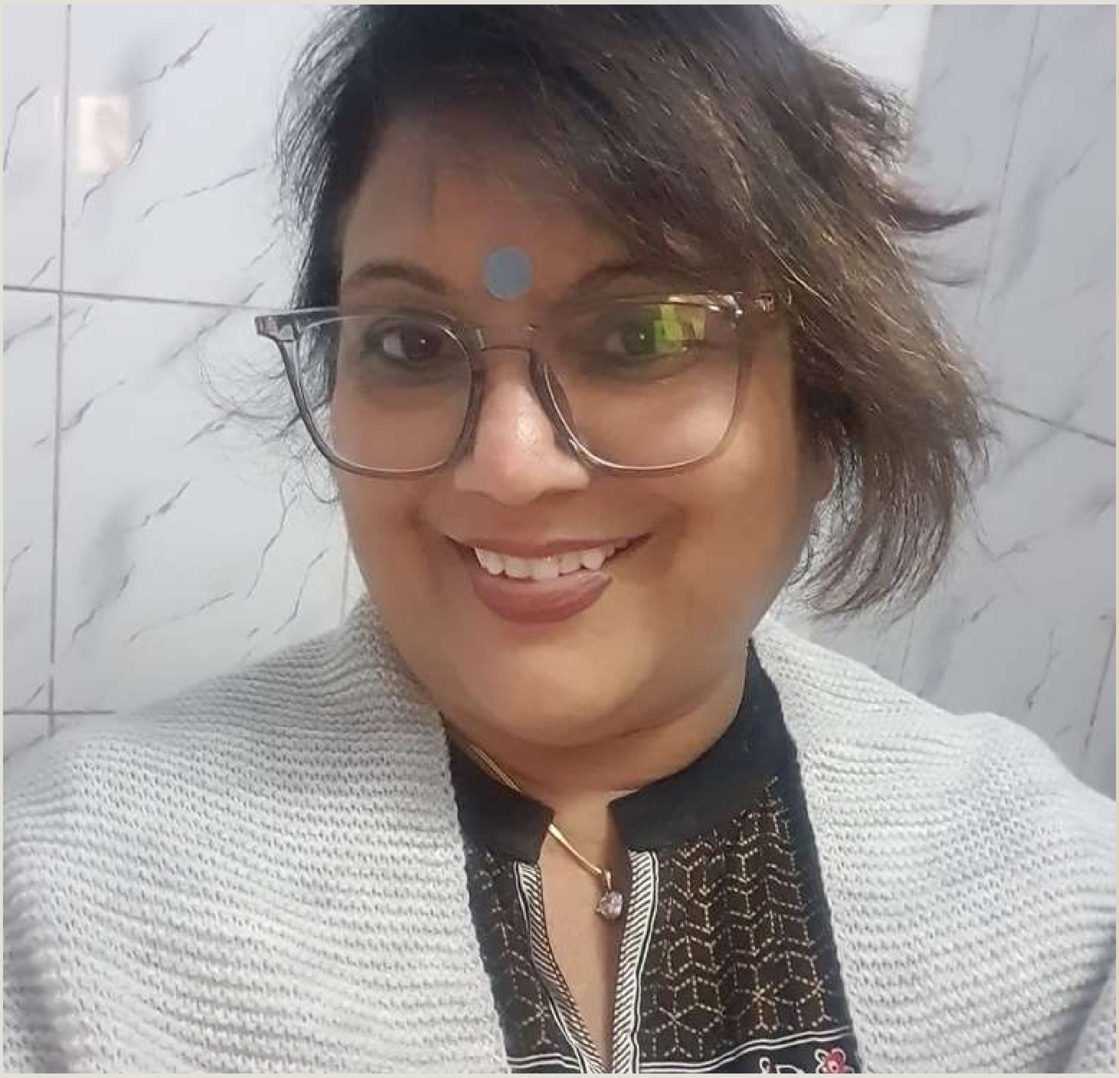

नटराज मंच

हम याद बहुत आएंगे भारतेंदु बाबू को समर्पित

आदरणीया चित्रा मोहन जी प्रख्यात व वरिष्ठ रंगमंच निर्देशिका व प्रवक्ता हैं । आप भारतेंदु नाट्य अकादमी से सम्बद्ध रही हैं । "हम याद बहुत आएंगे" महान नाट्यकार व आधुनिक हिंदी के प्रणेता भारतेंदु बाबू को समर्पित आपका मौलिक नाटक है । नाट्य-कला को समर्पित वीथिका के इस मंच पर इस अद्भुत, संगीतमयी नाटक के दुसरे अंक का प्रथम दृश्य आप पाठकों के सम्मुख है ।

हम याद बहुत आएंगे भारतेंदु बाबू को समर्पित

मौलिक नाटक

लेखिका- चित्रा मोहन

अंक 2 \ दृश्य 1

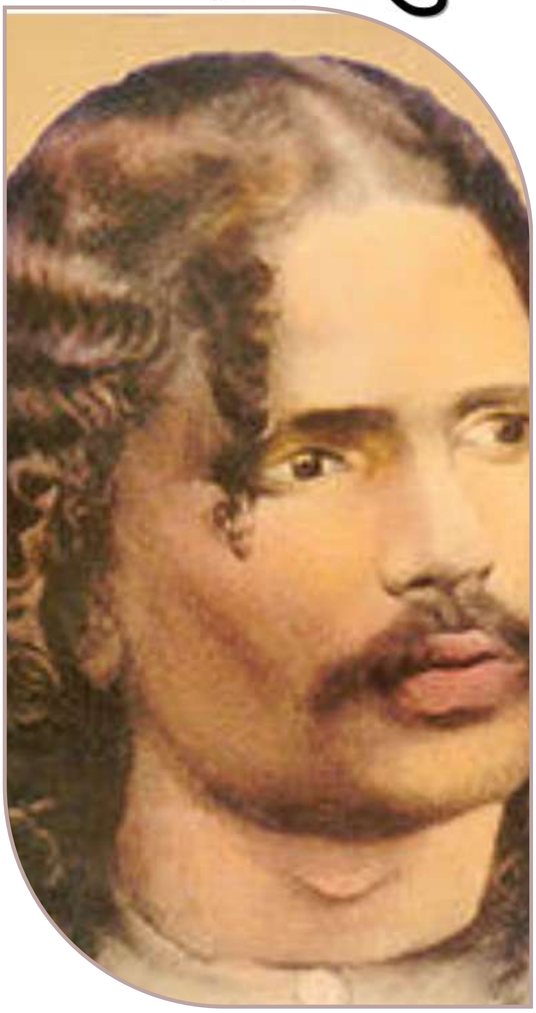

पात्र परिचय

भारतेंदु बाबू उम्र (समयानुसार 28 से 35 वर्ष तक)
लड़की -1- कोरस (नयना)
इशिता - 26 साल (ये भी दृश्यानुसार मन्नो देवी की भूमिका में भी)
चौबे पंडा: उम्र - 50
कोरस: 5 से 6 जनों का
मन्नो देवी: (रुक्मिणी/ललिता की भूमिका)
मल्लिका: (चंद्रावली / राधा)
लड़की - 2 - (सुमुखि) कोरस - (शोहदा, लाला, सोहा आदि कोरस से ही भूमिकाएं करेंगे)

(मंच पर प्रकाश / पूर्व दृश्य में रखी भारतेंदु की मूर्ति पर प्रकाश उभरता है मूर्ति पर प्रकाश आने के साथ-साथ, दो कलाकार अगल बगल से आकर मूर्ति के सिर पर एक कपड़े का बना पीला साफा भी रखते हैं जिसपर सुंदर मोरपंख लगा हुआ है। साफा पहनाने के साथ ही संगीत आरंभ होता है। शेष कोरस नृत्य भंगिमा में मंच पर प्रवेश करता है उसके आने के बाद भारतेंदु बाबू का प्रवेश, वे मूर्ति पर रखा साफा उतार कर स्वयं पहन लेते हैं और नृत्य मंडली में सम्मिलित हो तनमय लीला' (पृष्ठ 202 - भारतेंदु समग्र) खेलते हुए स्वयं गा उठते हैं।, इतने मे मन्नो और मल्लिका भी राधा व रुकमिनी बन कर लीला करती है।)

गीत: आपुन को गोविंद कहत है छाँड़ि राधिका नाम,
राधे भई आपु घनश्याम ।।
कबहूँ आपन नाम लेई के राधा राधा गावे,
कबहूँ श्याम तन पर निज चुनरी ओढ़ावे,
राधा बावरी कृष्ण प्रेममय सुध बुध बिसरावै
कान्हा को राधा कहे आपु भई घनश्याम

राधा बनी मल्लिका: रुकिये-रुकिये । कट-कट - भई ये आप क्या कर रहे हैं भारतेंदु जी, यानि भूमिका करने वाले अभिनेता जी।

भारतेंदु - कहाँ सब इतना सुंदर तो चल रहा है, आपने राधा की भूमिका स्वयं कर डाली, कवित भी उलट-पलट दिये। अब प्रयोगिक स्तर पर इतनी उलट फेर तो क्षम्य है मल्लिका जी।

रुक्मणी बनी मन्नो यानी इशिता: वो ठीक है, अगर भाव न बदले तो। किंतु ये भाव तो राधा का है, वो स्वयम कृष्ण बनकर राधे-राधे पुकार रही है,कृष्ण तो राधे राधे पुकारते ही हैं इस लिये इसमें नवीनता कहाँ है? आपका ये प्रायोगिक उलट फेर तनिक भी क्षम्य नहीं है।

भारतेंदु: अच्छा भई आप दोनों स्त्रियों से हम हारे। चलिये अगले पूर्वाभ्यास में आप इसे सही कर लीजिएगा

मल्लिका: लाइये ये साफा हमे दीजिए, मैं राधा और (मन्नों से) आप रुम्मिणी रहेंगी पूर्ववत।

मन्नो (स्वगत):मेरी भूमिका तो रुम्मिनी जैसी है ही, जिसके होते हुए भी श्याम राधे राधे ही जपते हैं।

भारतेंदु: आपने कुछ कहा रुक्मिनी ?
मन्नो (रुक्मणी):नहीं-नहीं - बस अपने संवाद दोहरा रही हूँ।
भारतेंदु: तो चलिए आगे का प्रसंग पूर्ण कर लें।
(संगीत के साथ सब यथास्थान ग्रहण करते हैं)
भारतेन्दु (सूत्रधार की भांति): ये प्रसंग है श्री चंद्रावली के अंतिम दृश्य का, तो दर्शकों, चंद्रावली, प्रभु के प्रेम में आकंठ डूबी, लोक लाज निंदा भूली, उन्हीं के विरह में डोल रही। बेकली में जाने कैसे-कैसे वचन बोल रही।
इतिशा/मन्नो (ललिता): हाय सखी चंद्रावली, तू क्यों इतनी बेकल हुई जाती है। मेरे पर तो सब कुछ बीत चुकी है, मैं इन व्यवहारों को अच्छी तरह से जानती हूँ । निगोड़े नैन ऐसे ही होते हैं।
उरझि परत, सुरझयो नही जात ,समुझत हैं न कोऊ।।
नही बरजै जो इनको लूटत है दिन रैन को चैन दोऊ।
इसलिये ऐसी बावरी सी मत डोलो ।
मल्लिका (चंद्रावली): डोलूंगी- डोलूंगी - हाय-हाय मुझे क्या हो गया है? मैने सब लज्जा ऐसे धो बहाई कि आए गए, भीतर बाहर किसी के भी सामने, कुछ भी बक देती हूँ । भला एक दिन के लिए, 'तुमसे मिलने आई ललिता सखी, तुम्हारे सामने भी निर्लज्ज सी प्रलाप किये जाती हूँ, तुमने कितने -धीरज से मेरी बात सुनी, मेरी लाज रखी। अहा!- संगीत और साहित्य में भी कैसा गुन होता है कि मनुष्य तन्मय हो जाता है। मैं तो उनके इसी रस-गुन की दीवानी हूँ । मेरे रोम रोम में वही बसे हैं। तुम सखी ललिता तुम कोई जोगन जादूगरनी तो नही, जो तुम्हारे सामने सब कुछ कहे जा रही हूँ । मेरा हरभाव, उज्ज्वल सरस प्रेममय उनके प्रति समर्पित है जो अंत में करूण रस पर ही समाप्तहै।

तू केहि चितवत चकित मृगी सी ।
केहि ढूँढ़त तेरो कहा है खोयो,
क्यों अकुलाति लखति ठगी सी
करत न लाज हार घर-बर की
सब छोड़-छाड़ कहीं दूर भगी सी।
हरीचंद ऐसेहि उरझी तौ,
क्यों नहीं डोलूं तेरे अंग लगी सी

(गाते-गाते बेसुध सी हो कर गिरती है, तभी सिर पर मोरपंखी साफ़ा पहने हाथ में बांसुरी लिए भारतेन्दु, जो कृष्ण बने हैं आते है और मुस्कुराते हुए उसे सम्भाल लेते है और त्रिभंगी मुद्रा में खड़े हो जाते हैं।) नेपथ्य में ढेरों की घंटियां बजती हैं।
इतिशा/मन्नो/ललिता: सखी बधाई है बधाई है, लाखन बधाई है। होश में आ देख कौन साक्षात तेरे सामने आन खड़े हैं-
(चंद्रावली उन्माद में उठ कर प्रभु के चरण छू कर उनके गले लग जाती है, ये देख ललिता धीरे से मुँह धुमा कर, अपने आंसू छुपाकर पोछती है।)
चंद्रावली:
राखौ हिये लगाई पियारे, किन मन कोहिं समाहू।
अनुदिन सुंदर बदन सुधानिधि नैन-चकोर दिखाहु ॥
हरीचंद पलकन की औटैं, छिनहु न नाथ दुराहु।
पिय तोहे कैसे बस कर राखूं, अब न दूरहीं जाहू ।
भारतेंदु /कृष्ण: तौ प्यारी, मैं तोहि छोड़ के कहाँ जाऊँगो । तू तो मेरी स्वरूप ही है, यह सब परम प्रेम की माया है, तू जब आखें बन्द करेगी, मोहे अपने निकट ही पावेगी ।
ललिता(मन्नो):पर नाथ ऐसे निठुरै क्यों हो? अपनों को तुम दुखी कैस देख सकते हो। हाय नाथ लाखों बातें सोची थी कि जब कभी सामने पाऊँगी तो तुमसे यह कहूंगी, वो पूछूंगी पर आज सामने कुछ भी नहीं पूछा जाता। समझ नहीं पा रही हम दोनों में किस का दुख अधिक है?
भारतेन्दु/ कृष्ण: प्यारी मैं निठुर नहीं हूँ। मैं तो अपने प्रेमी जनों के लिए बिन मोल का दास हूँ पर मैं क्या करूँ, मेरे से प्रेम करने वालों को यदि मैं इतनी आसानी से मिल जाऊं तो वे मेरा मोल ही नहीं समझते। उनको तो मुझसे अधिक मेरे विरह का मोल समझ आता है। ताही से मैंहू बचाय जाऊं हूँ। मेरी या निठुरता में, जो प्रेमी हैं उनको तो प्रेम और बढ़े और जे कच्चे हैं उनको हमाई बात खल जाये। सो प्यारी, बात है दूर की। तुमाओ का? तुम और हम तो एक ही हैं, नतुम हमसे जुदा हो न हम तुम से जुदा हैं। हम तो पहले कहे की ये सब लीला है ।
(चंद्रावली से हाथ जोड़ कर) प्यारी छिमा करियो, हम तुम्हारे सबन के जनम जनम के सथियां हैं, तुमारे प्रेम से हम कबहूँ उरिन नहीं हो पायेंगे ।
(आंखों में आंसू आ जाते हैं)

मल्लिका/चंद्रावली (घबराकर): बस-बस नाथ बहुत भई इतनी न सही जायेगी ।
इतिशा/मन्नो/ललिता: बस करो प्यारे,तुम्हारी आँखों में आंसू हमसे न देखे जायेंगे। (गले लगा लेती है, कृष्ण दोनों का हाथ पकड़ कर उठते हैं कोरस उनके इर्द गिर्द घेरा बना लेता है, रास आरंभ होता है।
गीत :

राम नीके निरखि निहारी,
नैन भरि नैनन को फल आजु लहौरी।
जुगल रूप छवि अनिल माधुरी,
रूप-सुधा-रस-सिंधु बहौरी ।
करम ज्ञान संसार जाल तजि,
इनही को सरबस करि जानौ,
यहै मनोरथ जिय को पूर्ण करोरी ।
जय राधे कृष्णा, जय रुक्मिणी कुंजबिहारी की।
जय बोलो जय बोले नटवर नागर, कृष्ण मुरारी की ।

(संगीत का आवर्तन बढ़ता है। प्रकाश घीरे -धीरे कम होता है।)

(क्रमशः अगले अंक में ....)

हास्य व्यंग्य

रेप इज सप्राइज सेक्स !!!

प्रो. मोहम्मद ज़ियाउल्लाह
विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग
डीसीएसके पीजी कॉलेज , मऊ

गुस्से से नथुना फुलाते हुए एंडी-पंजों पर उचक-उचक कर राय साहब भाई जगीरा से यह फरमा रहे थे। भाई! कैसाकलयुग आ गया है ? भारत के सपूतो के कैसे करतूत हो गए हैं? लंगड़ी हो कि लूली, बच्ची हो कि जवान, हिन्दू कि मुसलमान, कामदेव की इस रेला में कोई क्यों सुरक्षित नहीं है? हे! भारत माते यह कैसी लीला है? क्या अब केवल प्रलय आना ही बाकी (रह गया) है? इस अंधेरगर्दी पर राजनीतिक देवियाँ तो चुप हैं ही मगर हे देवीआप क्यों मौन हैं? आखिर इन असुरो का अंत कब होगा।

एक पल का विराम !राय साहब फिर से भबके

प्रिय भाई जगीरा! आप तो स्वर्गीय राजीव गाँधी को जानते होंगे, उनका भाषण भी सुना होगा। वे घटनाओं को कालों में बताते थे "हमने देखा, हम देखते हैं और हम देखेंगे। इसी अदभूत विधि से हमें घटनाओं के कारण, घटनाओं की स्थिति और परिणाम का पता चल जाता था। काश आज जाता वह होते तो हमें बलात्कार का कारण और निवारण भी समझा जाते ।

उफ यह महिला शक्तियों की प्रतीकें ! इटैलियन हो या कि इरानी ! मानो सब की सब बहरी हो गई हों, मासूमों की चीखें इस राजनीतिक प्रदूषण जैसे नक्कारखाने में तूती की आवाज बन कर रह गई हो।

एक लम्बी ख़ामोशी ।

भारत ही एक मात्र देश है जहां ' नारी शक्ति की पूजा होती है और नारी को सशक्त बनाने के लिए महिलाओं से अधिक पुरुष जतन करते हैं। फिर बेटियाँ मजबूर क्यों दिखाई पड़ती है? राय साहब गाथा सुनाए जा रहे थे और ऐसा लग रहा था कि जगीरा भावविभोर हो रहे हों ! मगर क्या पता कि जगीरा के कानों के परदे से जैसे ही कुछ नारियों का नाम टकराया जगीरा 'मुंगेरी लाल'' के हसीन सपने में खो गए और मन ही मन उनके मन में लड्डू फूटा, रेप इज सप्राइज सेक्स का लड्डू। और वह सपने से तब लौटे जब राय साहब की बात समाप्त हुई हो गई फिर क्या था। अपने चित- परिचित अन्दाज में सिगरेट सुलगाई, लम्बा कश लिया, एक्सलेटर पर पैर दबाया, धुंवा राय साहब के मुंह पर छोड़ा और यह बड़बड़ाते हुए, "जब शीला की जवानी होगी तो मुन्नी की बदनामी कैसी" आगे निकल गए।

कुफरी यात्रा : विश्रांत लाल

मैं विश्रांत लाल, हम लोग अपने स्कूल की ओर से चंडीगढ़ और शिमला घूमने गए । हमारी यात्रा 2 जुलाई को रात 10 बजे ट्रेन से शुरू हुई । अगले दिन सुबह 11 बजे हम चंडीगढ़ पंहुचे। उसके बाद हम लोग होटल गए फिर दोपहर का भोजन कर 3 बजे हम रॉक गार्डन और सुकना झील देखने गए, रॉक गार्डन में हमें बहुत अधिक गर्मी का सामना करना पड़ा । रॉक गार्डन में एक म्यूजीयम भी था जिसमें पुराने कपड़ों का इस्तेमाल कर एक पूरे गांव का दृश्य बनाया गया है, वहां पर हमने बहुत सी फोटो खिंचाई, और फिर हम लोग सुकना झील देखने गए । सुकना झील का दृश्य भी बहुत सुंदर था। वहां पर बोटिंग सी सुविधा भी थी । फिर हम लोग चंडीगढ़ की सेक्टर 22 की मार्केट घूमने गए, काफी बड़ी मार्केट थी जो कि दिल्ली की सरोजनी नगर मार्केट की याद दिला रही थी। उसके बाद हम वापस होटल गए और रात का भोजन किया । अगले दिन सुबह का नाश्ता कर के हम लोग शिमला के लिए बस से निकल गए ।

शिमला जाते समय रास्ते मे जो बड़े-बड़े पहाड़ देखने को मिल रहे थे उनको देख कर बहुत ही आश्चर्य का अनुभव हो रहा थे जैसे ही कोई बड़ा पहाड़ दिखता तो सब लोग अपना फोन निकाल कर फोटो और वीडियो बनाने लगते थे, मेरे लिए तो यह सब पहली बार था बड़े-बड़े पहाड़ और उन पर छोटे-छोटे लाल रंग के घर देख कर सभी लोग बहुत खुश हो रहे थे, शायद सभी के लिए यह दृश्य पहली बार हो। जैसे-जैसे हम लोग पहाड़ पर ऊपर की ओर चलते जा रहे थे मेरे कान में कुछ अजीब सा लग रहा था, जो कि वायु दाब कम होने का असर था पहले तो लगा कि केवल मुझे ही ऐसा लग रहा है जिससे मुझे थोड़ी सी घबराहट हो रही थी ऐसा लग रहा था कि मेरी तबियत बिगड़ रही है लेकिन कुछ समय बाद बाकी लोगों से पूछा तो उनको भी वैसा ही लग रहा था ।

काफी समय चलाने के बाद हम एक स्थान पर पहुंचे जहां से हमारा शिमला का होटल कुछ ही दूरी पर था लेकिन वहां पर बड़ी बस नही जा सकती थी इसलिए हम लोग वहां उतर कर एक छोटी बस के द्वारा होटल तक गए । होटल पहुचते-पहुचते काफी शाम हो गयी थी । जब हम लोग होटल पहुंचे तो बड़ा आश्चर्य हुआ, वहां के सभी होटल में लोग टॉप फ्लोर से एंट्री करते है और सभी घर भी इसी प्रकार से बने होते है कि आप ऊपर के तल से प्रवेश कर नीचे ग्राउंड फ्लोर तक जाए, एक और खास बात है शिमला के घरों और होटल की की गाड़ियों की पार्किंग घरों की छत पर होती है। जैसे ही हम लोग पंहुचे तो तुरंत ही हमने कुछ भोजन किया और 1 घंटे आराम करने के बाद हम लोग माल रोड और झांकी मंदिर के लिए निकल गए । माल रोड हमारे होटल से 3 km दूर थी सो हैम लोग पैदल ही गए। माल रोड को देख कर लगता है कि हम लोग किसी यूरोप के देश मे गए हों क्यूंकि वहां की इमारतें अंग्रेजो के समय की बनी हुई है। माल रोड पर एक चर्च है और उसके पास ही एक लक्कड़ मार्केट भी है यहां पर ठंड के मौसम में आने पर बर्फ भी दिखती है लेकिन जब हम लोग गए थे तो ऐसा कुछ भी नही था । चर्च देखने के बाद हम लोग झांकी मंदिर के लिए निकले लेकिन मंदिर के रास्ते की चढ़ाई बहुत खड़ी चढ़ान है जो कि मै नही चढ़ पाया और आधे रास्ते से मुझे वापस आना पड़ा। फिर हम कुछ देर लकड मार्केट घूमे और देर रात 10 बजे हम लोग होटल वापस आ गये। रात का भोजन किया और सो गये ।

अगले दिन हम लोग कुफरी घूमने गए । जैसे ही हम कुफरी पहुचे तो वहां का मौसम शिमला से काफी अलग था वहां काफी ठंड थी मैं तो साथ मे जैकेट लेके गया था लेकिन बाकी लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ा क्योंकि वहां का मौसम काफी ठंडा था। कुफरी हिल पर जाने के लिए हम लोग को घोड़े पर बैठ कर ही जाना पड़ा क्योंकि उस रास्ते पर काफी कींचड़ होता है जिस पर पैदल नही चला जा सकता है ।

कुफरी हिल जाने के और भी रास्ते हैं जो नए लोगों को नही पता होता है, जैसे ही हम कुफरी हिल पर पहुंचे तो कुछ ही देर बाद वहां पर बहुत तेज बारिश होने लगी जो कि 3 घंटों तक होती रही । कुफरी में कुछ देर इन्जॉय करने के बाद हम लो फिर से घोड़े पर बैठ कर वापस आ गये। वहां के लोग काफी समझदार और ट्रेंड होते है जो की टूरिस्ट को कुफरी हिल से नीचे लेते जाते है और ऊपर भी चढ़ा देते हैं, बस यात्री को घोड़े पर बैठना है और घोडा अपने आप गंतव्य तक पहुंच देगा । उसके बाद हम लोग शाम को वापस होटल गए और रात का भोजन कर सो गये ।

अगले दिन हम लोग शिमला से चंडीगढ़ के लिए निकल गए, जब हम लोग वापस जा रहे थे तभी शिमला का मौसम खराब होना शुरू हो गया, रास्ते मे खूब बारिश हुई और कई जगह लैंडस्लाइड भी हुई थी लेकिन हम लोग साफ बच गए थे और देर शाम चंडीगढ़ स्टेशन पहुच गए, जहां से रात 9 बजे की ट्रेन से हम लोग वापस लखनऊ आ गए ।

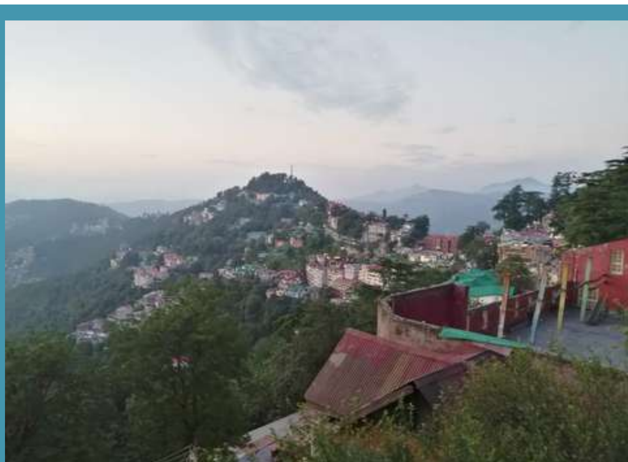

जवे

अश्वनी तिवारी

उत्तर भारत में नाश्ते में पसंदीदा व्यंजन है कुछ लोग नमक के जवे या नमकीन सेवई के नाम से जानते है सेवई शब्द का उल्लेख, संगम साहित्य के संदर्भों में पहली शताब्दी ईस्वी के आसपास सेवई और इडियप्पम का है कर्नाटक के दक्षिणी हिस्सों में, श्याविगे अलग-अलग स्थिरता वाले विभिन्न अनाजों से बनाया जाता है। जब इसे रागी या बाजरा के साथ बनाया जाता है तो सेवई अधिक मोटी होती है, जबकि जब चावल या गेहूं के साथ बनाई जाती है तो इसकी रेशे पतली होती हैं। सेवई को मीठी या नमकीन डिश के रूप में बनाया जा सकता है. पर पारंपरिक रूप से जवे जुलाई और अगस्त के महीने घर कि ग्रहणी गेहू के आटे और मैदा को गूथ कर उसकी लोई बनाकर हाथो से पतला बत्ती बनाकर छोटे छोटे टुकड़ों हाथो बनाते क्यों की जुलाई अगस्त का महीना जवे तोड़ने के लिए अनुकूल होता है ।

जवे

सामग्री-

दो कप जवे
1/4 कप मटर के दाने,
आधा चम्मच जीरा,
3 बारीक कटी हरी मिर्च,
दो बारीक कटे हुए आलू,
1 बारीक कटी हुई प्याज,
1 बारीक कटा टमाटर,
लाल मिर्च पाउडर स्वादानुसार
1/2 चम्मच हल्दी पाउडर,
हरी धनिया स्वादानुसार
करी पत्ता जरूरत के अनुसार
1/2 चम्मच कस्तूरी मेथी
जरूरत के अनुसार तेल

सबसे पहले एक कड़ाही में जवे डालकर भून लें । जब जवे भून कर सुनहरे हो जाएं तब उन्हें एक प्लेट में निकाल लें। फिर कड़ाही में जरूरअनुसार तेल डाले कड़ाही में जीरा डाले उसके बाद कड़ाही में बारीक कटी हुई प्याज और बारीक कटी हुई हरी मिर्च डालकर भूनें। जब प्याज भून जाएं तब कड़ाही में बारीक कटा हुआ टमाटर डाल कर पकाएं। उसके बाद कड़ाही में हल्दी पॉउडर और लाल मिर्च पॉउडर डालकर पकाएं। फिर कड़ाही में मटर के दाने और बारीक कटे हुए आलू के टुकड़ें डालकर और करी पत्ताफ्राई कर लें। फिर कड़ाही में थोड़ा सा पानी डालकर कड़ाही को ढक्कन से ढककर पकाएं। जब पक जाए तब कड़ाही में फ्राई किए हुए जवे और स्वादनुसार नमक डालकर पकाएं। जावो को बीच बीच में चलाते हुए पकाएं। जब कड़ाही का पानी सुख जाएं तब कड़ाही में बारीक कटा हुआ हरा धनियाँ डालकर मिला ले और गैस को बंद कर दे आपके स्वादिष्ट नमकीन जवे बनकर तैयार है ।

कजरी.... © अविनाश पाण्डेय

**पपिहा कहे पियु हमसे ना कहात बा
कजरी गवात बा ना!**

**पड़े रिमझिम फुहार, डोले अमवा क डार
केहू झुलवा झुलाए, ई जोहात बा
कजरी गवात बा ना!**

**बहे पुरवा झकझोर, जोहे मनवा सगरी ओर
उनके नेहिया क जागल पियास बा
कजरी गवात बा ना!**

**गमके माटी सोन्ह-सोन्ह, कटे रात ओन्ह-ओन्ह
सुनी सेजिया से जिया ना जुड़ात बा
कजरी गवात बा ना!**

**भिजते अइलें पिया मोर, बहे नयना से लोर
आज मिलल हमें बड़का सौगात बा
कजरी गवात बा ना!**

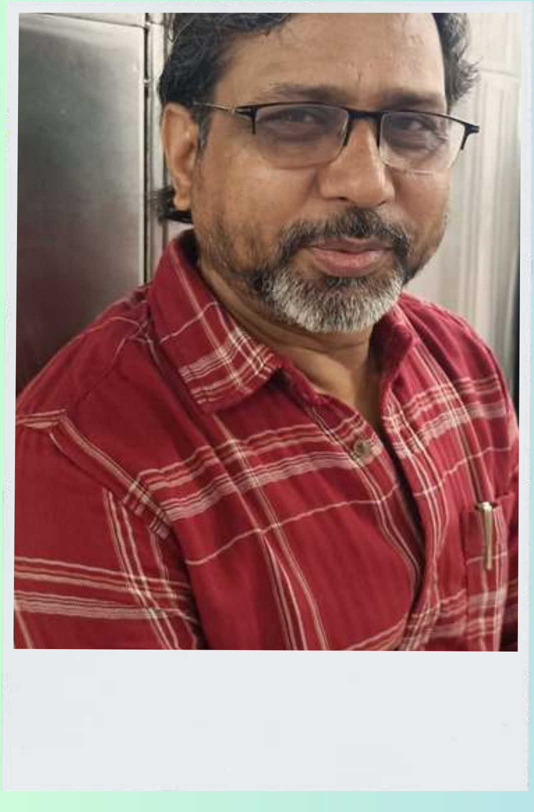

ग़ज़ल © बृजेश गिरि

बावफा होने से अच्छा है बेवफा होना,
बहुत मुश्किल है इस जमाने में अच्छा होना

कैसे-कैसे लोगों को मिल गई मंजिलें,
मेरी किस्मत में लिखा है तुझसे जुदा होना।

आज के दौर में कौन किसी का होता है,
ये आम बात है लोगों का तन्हा होना।

बहुत से लोग मुझे नाकाम शख्स कहते हैं,
क्या गुनाह है किसी का सच्चा होना।

याद बहुत आते हैं दिन मुझे बचपन के,
चाहता है दिल मेरा फिर से बच्चा होना।

लकड़हारा

© घनश्याम कुमार
युवा कवि पलामू झारखंड

भला इस मानुस
के बारे में कौन सोचेगा
जो अतीत के गर्त से
भविष्य के द्वार पर आ खड़ा है

वही लकड़ी के टुकड़े से
काटता है असख्य लकड़ियों को
ढूंढता है
अनवरत

सूखी सूखी टहनियां
हरे ओर नवकोपलो को
उसे कटाने में डर लगता है
यहीं सृजनहार हैं

भोर के चांद देखकर निकले
कितने जल्दी दोपहर हो गए
रोकता है स्वयं को
प्यासा यह पथिक
कल कल करती ये धाराये

आज विपरीत दिशा में
बह रही हैं
गंदे मटमैला जल
अब नहीं भाता इन कंठो को
बासी सुखी रोटिया
खाकर रो रहा था
उसके गले में अटक गई -सुखी रोटियां
मन को शांत कर अपनेउधेड़बुन में
गाकर गीत चला लकड़हारा

रुनझुन रुनझुन बजती
साइकिल कीघण्टिया
चला राही
प्यास की आसबुझाने
चंद रुपयों कोजुटाने
निरंतर आज भी लकड़हारा
लकड़हारा ही कहलाता है

फटी एड़िया -फटे कपड़े
चेहरे पर पड़ी हुई छुरियां
कल से निरंतर चलता हुआ
आज तक निरंतर चलता
आ रहा है।

क था

सुदर्शना

लेखिका - नीरजा हेमेन्द्र जी
वरिष्ठ साहित्यकार, हैदराबाद

यह एक छोटा-सा गाँव है नरहरपुर। कहने को तो यह गाँव ही है। गाँव के सभी चिह्नन भी यहाँ मौजूद है.....जैसे गाँव के पश्चिम दिशा में दस-बारह फर्लांग की दूरी पर गाँव का बड़ा पोखर, गाँव के मध्य मन्दिर व मन्दिर के प्रागंण में बायीं ओर छोटा-सा ताल तथा गाँव के चारों ओर दूर-दूर तक खेत-खलिहान, बाग-बगीचों का फैलाव है। इन चिह्ननों के साथ नरहरपुर पूरी तरह से एक गाँव है, किन्तु न जाने कब और कैसे शहर की विषैली हवा इस गाँव तक आ पहुँची? हरे-भरे खेतों के बीच में अब सीमेन्ट के पक्के मकान बनने लगे हैं।

पाँचवीं कक्षा तक के सरकारी विद्यालय के अतिरिक्त आगे की कक्षाओं की पढ़ाई के लिए कोई सरकारी स्कूल भले ही न हो, किन्तु बिजली के तार और टी0वी0 के केबल पूरे गाँव में लग गये हैं। जो बच्चे आगे पढ़ना चाहते हैं, वे गाँव के प्राईवेट विद्यालयों में पढ़ते हैं। गाँव में कई प्राईवेट विद्यालय खुल गये हैं। पाँचवी कक्षा से आगे सरकारी विद्यालय न होने के कारण गाँव में इन प्राईवेट विद्यालयों का धन्धा चोखा होने लगा है। गाँव भी बड़ा होता जा रहा है आबादी व क्षेत्रफल दोनों ही दृष्टि से।

यही कोई सात-आठ माह हुए हैं, सुदर्शना को इस गाँव में व्याह कर आये हुए। तब से अब तक नरहरपुर में काफी बदलाव आ गया है। लोगों की शिक्षा में अधिक सुधार तो नही आया है, अपितु यहाँ के युवा फैशनेबल कपड़े, मोबाईल फोन, सेल्फी, फिल्मी गानों आदि के शौकीन होते जा रहे हैं। घरों में सोफा, फ्रीज, रंगीन टी0 वी0 आदि सुख-सुविधा की चीजें लोगों की आवश्यकता बनती जा रही है । किसी घर में इस तरह कर कोई चीज यदि आ गयी तो पड़ोसी भी चाहता है कि वो चीज उसके घर में भी आ जाये। भले ही उसे उस चीज की आवश्यकता न हो। विलासिता की वस्तुएँ एकत्र करने में एक-दूसरे से होड़ और प्रतिस्पर्धा की भावना गाँव में बढ़ती जा रही है।

सुदर्शना की ससुराल यहाँ के खाते-पीते परिवारों में शामिल है। घर में सास-ससुर, पति के अतिरिक्त एक देवर, व्याहने योग्य दो ननदें हैं । खेती-बाड़ी के अतिरिक्त दरवाजे पर बाईक व ट्रैक्टर भी हैं। सुदर्शना के माता-पिता ने उसका व्याह समृद्ध परिवार देखकर किया है। सुदर्शना का मायका यहाँ से लगभग चैदह कोस दूर जोखनपुर गाँव में हैं।

विवाह के पश्चात् पहली बार उसका मरद छोटेलाल उसे ससुराल से विदा कराकर ट्रैक्टर से लेकर मायके गया था। आधे घंटे के भीतर वह अपने पीहर पहुँच गयी थी। बड़ी खुश थी वो अपने मायके आकर। अपने मरद के साथ पहली बार ट्रैक्टर से मायके आयी थी। माई-बाबू के दरवाजे जब वो ट्रैक्टर से उतरी तो पास पड़ोस की महिलाएँ, बच्चे ट्रैक्टर की आवाज सुनकर अपने-अपने घरों से बाहर निकल आये। उसे ट्रैक्टर से उतरते हुए अचम्भे से देख रहे थे। सुदर्शना का भी हृदय से प्रफुल्ल्ति हो रहा था।

सुदर्शना के माई-बाबू कितने उत्साह और गर्व के साथ उसे व उसके मरद छोटेलाल ले कर घर के भीतर दालान में ले गये। दालान में चारपाई पर उसके बाबू ने नयी दरी बिछा दी। छोटेलाल बैठ गया था। सुदर्शना अपनी माई के गले लग कर भेंट करने लगी।

क्र म शः

सुदर्शना ऊं....ऊं कर रो रही थी किन्तु माई बिटिया हो बिटिया कहती हुई रोए जा रही थी। माँ की ममत्व विवाह के पश्चात् पहली बार घर आयी बेटी को देख कर अत्यन्त भावविह्वल हो रहा था। सुदर्शना माई के गले लगकर देर तक भेंटने, रोने के पश्चात् अलग हुई और माई के साथ रसोई में चली गयी।

पहली बार ससुराल आये दामाद के लिए कुछ विशेष भोजन बनाना था। इससे पहले सुदर्शना के बाबू दामाद को कटोरी में गुड़ और लोटे में पानी रख कर दामाद को देकर आ गये थे। छोटेलाल ने गुड़ खाकर पानी पी लिया था और चुपचाप बैठा था।

सुदर्शना के बाबू हरक गाँव के छोटे किसान हैं। थोड़े-से खेत, एक कच्चा घर, दरवाजे पर बँधी दो गायें........बस यही है उसके पिता हरक की सम्पत्ति। किन्तु वो प्रसन्न हैं कि अपनी पुत्री सुदर्शना का विवाह उन्होने खाते-पीते घर में किया है। सुदर्शना को ट्रैक्टर से घर आया देख कर उसके माई-बाबू, छोटे भाई बहन सभी खूब प्रसन्न हो गए थे। खुश क्यों न हो भला? दरवाजे पर ट्रैक्टर होना गाँवों में सम्पन्नता का निशानी मानी जाती है। सुदर्शना माँ के घर ट्रैक्टर से आयी है। गाँव में आसपास व्याही लड़कियाँ पति के साथ साईकिल से या कभी-कभी पैदल ही मायके आ जाती हैं।

सुदर्शना की माई ने हैसियत भर अपने दामाद छोटेलाल का स्वागत्-सत्कार किया। माई और सुदर्शना ने मिलकर दोपहर के भोजन में स्वादिष्ट पकवान बनाये जो सुदर्शना के यहाँ कभी-कभार तीज त्योहार आदि में बनाये जाते हैं। भोजन करने के उपरान्त शाम को छोटेलाल ट्रैक्टर लेकर चला गया। सुदर्शना दो-चार दिन यहाँ रहेगी। माँ गाँव के पंडित से साइत-घड़ी पूछ कर दिन और जतरा तय कर सुदर्शना की ससुराल में संदेशा कहलवा देगी। तत्पश्चात् कोई आकर सुदर्शना को विदा करा कर ले जायेगा।

समय कितनी तीव्र गति से आगे बढ़ता चला जा रहा है। देखते-देखते दस दिन हो गए थे सुदर्शना को पीहर आये। सुदर्शना ने सोचा था कि वह माँ के घर दो-चार सप्ताह रहेगी। गाँव की अपनी सखियों, हम उम्र चाचियों, काकियों से मिलेगी....खूब घूमेगी।

किन्तु.......पंडित से सुदर्शना की विदाई का दिन और साईत-घड़ी पूछ कर हरकू ने गाँव के व्यक्ति से उसकी ससुराल में विदाई करवाने के लिए कहलवा दिया। निश्चित तिथि को छोटेलाल आया और सुदर्शना को विदा कराकर ले गया। आखिर व्याहता लड़की को हरकू कितने दिन अपने घर में रख सकता था?

दूसरी बार शीघ्र ही सावन में माँ के घर वह पुनः आयी। इस बार भी उसका मरद छोटेलाल उसे ट्रैक्टर से छोड़ गया। माई-बाबू द्वारा ससुराली जनों का हाल-व्यवहार पूछने पर सुदर्शना ने बता दिया कि ससुराल में उसके प्रति सबका व्यवहार ठीक है। सभी उससे खुश हैं। हफ्ते-दस दिनों के पश्चात् छोटेलाल आया और उसे विदा कराकर ले गया। माई-बाबू ने पूर्व की भाँति विदाई में उसे अपनी हैसियत के अनुसार सामान देकर विदा किया। ससुराल पहुँच कर सुदर्शना मन लगाकर घर के कामकाज व सबकी सेवा करने लगी।

" घर से कुछ रूपये पैसे लाई कि इस बार भी ऐसे ही चली आयी।" रसोई के काम समाप्त कर सुदर्शना आँगन में बैठकर बर्तन माँज रही थी कि पीछे से उसकी सास के स्वर उसके कानों में पड़े। उसने पलटकर देखना चाहा कि वो किससे कह रही हैं। सुदर्शना हड़बड़ा गयी यह देखकर कि उसकी सास उससे ही कह रही हैं पर किस संदर्भ में, यह जानने के लिए वो अपनी सास से पूछ बैठी,

" क्या हुआ माता जी? "

" हुआ क्या.....? क्या तुम नही जानती....? पहली बार आयी-गयी किसी ने कुछ न कहा। इस बार भी बिना नगदी लिए चली आयी। " सुदर्शना हक्का-बक्का अपनी सास को देखे जा रही थी। बर्तन माँजते हुए उसके हाथ रूक गये थे।

" तुम्हारे माई-बाप तो व्याह में एक बार खर्च कर के छुट्टी पा गये, और हमारे सर पर तुम्हें हमेशा के लिए बैठा दिया। " यह सब सुनकर सुदर्शना को रोना आ रहा था।

क्र म शः

"तुम्हें नही तो तुम्हारे माँ-बाप को तो पता है कि दुआर पर चार चीजें हैं। जिनमें पैसा लगा है। उन चीजों से गाँव में इज्जत है......रूतबा है। तुमहू जिस ट्रैक्टर पर चढ़ कर बप्पा के घर गई रहो, वो बैंक से कर्जा लेकर लिया है, जिसका महीने-महीने पैसा जाता है। इज्जत तो तुम्हारे बाप की भी गाँव में बढ़ी थी। उसका भी फर्ज था कि कुछ नही तो ट्रैक्टर के ही पैसे दे देता। '' सुदर्शना चुप। एक शब्द भी जबान से नही निकल पा रहा था। किन्तु मन ही मन काँप रही थी। उसने किसी प्रकार अपनी रूलाई रोक रखी थी। खरी-खोटी सुनाकर उसकी सास बाहर दालान में चली गयी। जहाँ सुदर्शना का पति, देवर, ननदे व ससुर सभी इकट्ठा बैठे थे।

अब आये दिन ही नही बल्कि दोनों पहर यही होने लगा। सास, ननदें तो डाँटती ही रहती थीं, अब देवर व उसका पति छोटेलाल भी सुदर्शना को अपमानित करने में कोई कसर नही छोड़ते। सुदर्शना दिन-रात रोती रहती। कभी-कभी सोचती कि क्या ऐसे ही उम्र कट जायेगी अपमान व जिल्लत सहते-सहते? सुदर्शना का गाँव भी यहाँ से दूर है। अपने मन की बात कैसे अपनी माई तक पहुँचाये...? यदि किसी प्रकार ये बात माई बाबू तक पहुँची भी तो वे कहाँ से दहेज लोभियों की मांग पूरी करेंगे? यदि दहेज न मिलने के कारण ये लोग मुझे छोड़ देंगे तो गाँव में मेरे माई-बाबू की कितनी बदनामी होगी....

......मेरी दो छोटी बहनें भी हैं। उनके लिए वर ढूँढते समय बाबू लड़के वालों से क्या कहेंगे कि एक बेटी को उसके ससुराल वालों ने छोड़ दिया है। लड़कियों को ससुराल वाले जब छोड़ देते हैं, तो उपहास लड़की और उसके घर वालों की उड़ाई जाती है। भले ही लड़की निर्दोष हो, किन्तु समाज परित्यक्ता पर ही हँसता है। लड़के वालों पर नही। यही हमारे समाज की विडम्बना है और लड़की की नियति। सुदर्शना भी तो ससुराल में जी-जान से सबकी सेवा कर सबको प्रसन्न रखना चाहती है। किन्तु परिस्थितियाँ दुरूह होती जा रही हैं।

छोटेलाल तो उसे मारता ही है, वह उसे अपना पति समझकर उसकी मार सहनकर लेती है। अब उसकी सासू माँ भी उसे मारने से नही हिचकतीं। सुदर्शना जानती है इन सबके पीछे एकमात्र कारण मायके से दहेज के पैसे मंगवाना है।

उस दिन सुदर्शना को रातभर नींद नही आयी जब उसकी सास ने उससे कहा कि अपने बाप के घर जाकर पचास हजार रूपये लाओ नही तो हम छोटेलाल का दूसरा व्याह कर देंगे। और तो और उसके ससुर बृजलाल भी अपनी पत्नी की हाँ में हाँ मिलाने के लिए सामने खड़े थे।

सुदर्शना सोचती रही कि उसके बाबू ने कितनी धूमधाम से उसका व्याह किया था। दहेज में बर्तन, गहने, कपड़े, अनाज, नगदी सब कुछ दिया था। दहेज की इतनी सारी वस्तुएँ देख रिश्तेदारों ने दाँतों तले उंगली दबा ली थीं। उसकी दो अन्य बहनें भी हैं। बाबू खेत बेच देंगे तो खाएंगे क्या? पूरा परिवार भूखा मरेगा, क्यों कि बाबू के पास जो कुछ भी है वो एक विस्वा खेत ही है। इससे ही पूरे परिवार का पालन-पोषण होता है। सुदर्शना बाबू के पास पैसे मांगने कभी नही जायेगी। दहेज लोभियों का मुँह भरने के लिए ये उपाय सही नही है।

दहेज का लोभ सुदर्शना के ससुराल वालों के मन में समा चुका था। उनके नेत्रों पर लोभ का आवरण इस प्रकार छा गया था कि उन्हें यह भी भान न था कि उनकी भी दो बेटियाँ हैं। यदि उन्हें भी इसी प्रकार लोभी ससुराल मिली तो वे क्या करेंगे....? उनकी दहेज की मांग कब तक पूरी करते रहेंगे?

अपमान और जिल्लत सहन कर-कर के सुदर्शना के दिन रात व्यतीत होते जा रहे थे। उसके व्याह को एक वर्ष होने को है। सुदर्शना ने निश्चय का लिया है कि वो अपने बाबू से दहेज के पैसे कभी नही मांगेगी। दहेज लोभियों की पिपासा शान्त करने का ये उपाय सही नही है बल्कि वह कोई काम करेगी और आत्मनिर्भर बनेगी। उसने सुना है कि गाँव में एक मैडम आती हैं। वो गाँव की औरतों को सिलाई सिखाती हैं। उनके सिले कपड़े शहर में ले जाकर बेचती हैं। गाँव की अनपढ़ औरतें काम सीख कर कुछ पैसे कमा ले रही हैं, जो उनकी घर गृहस्थी, बच्चों की शिक्षा में काम आ रहा है। सुदर्शना तो फिर भी कक्षा पाँच उत्तीर्ण है। उसके गाँव में कक्षा पाँच में तक ही विद्यालय था अन्यथा वह आगे अवश्य पढ़ती।

एक दिन सुदर्शना सिलाई सीख रही गाँव की एक महिला के साथ सिलाई सिखाने वाली उस मैडम से मिली और काम सीखने की इच्छा प्रकट की। उन्होने सहर्ष सुदर्शना को सीखने के लिए आने को कहा। विदाई में माई के दिये कुछ नये कपड़े लेकर सुदर्शना दूसरे दिन से सिलाई केन्द्र जाने लगी। सिलाई केन्द्र जाने से पहले वो घर में सबके लिए भोजन बनाकर, चौका-बर्तन कर के रख देती।

सिलाई सिखने में सुदर्शना का खूब मन लग रहा था। सिलाई सिखाने वाली मैडम उसके काम से अत्यन्त प्रसन्न थीं। सप्ताह भर हुए थे सुदर्शना को काम पर जाते हुए। एक दिन वो सिलाई केन्द्र से लौटी ही थी कि '' तेरी इस कमाई से ट्रैक्टर के पैसे जमा होंगे।'' कहते हुए उसका देवर उसकी पीठ पर लात घूसों से मारने लगा। '' गाँव में घूमती है और.........(गालियाँ).....करती है। '' उसका पति छोटेलाल दालान में बैठा सब देख रहा था। सुदर्शना गालियाँ और मार खती रही किन्तु वो कुछ नही बोला।

अपनी कोठरी में जाकर सुदर्शना फूट-फूट कर रोई। उसका रोना सुनने वाला, उसकी पीड़ा सुनने, समझने वाला वहाँ कोई नही था। वह भरपूर रोई, इतना की आँखें सूज गयी, गला रूँध गया। आँचल से अपने आँसुओं को पोंछा तथा स्वंय को समझाया। उसी क्षण मन ही मन कुछ निश्चय किया और शान्त हो गयी।

सुदर्शना के मायके के गाँव में पड़ोस में रहने वाले पटवारी काका के घर अखबार आता था। सुदर्शना प्रतिदिन उनसे मांग कर अखबार पढ़ती थी। उसमें ही पढ़ा था कि दहेज लेना कानूनन अपराध है। दहेज के लिए बहुओं के साथ मारपीट, गाली-गलौज, बदसलूकी ससुराल वाले नही कर सकते हैं। यह भी कि दहेज के लिए कोई पति अपनी पत्नी को नही छोड़ सकता। यदि छोड़ता है तो उसे आजीवन पत्नी के भरण-पोषण का खर्च देना होगा।

सुदर्शना अपने ससुराल वालों को सद्बुद्धि देने के नियम-कानून जानती है, किन्तु वो ये सब नही करेगी। सेवा व प्रेम से इनका हृदय जीत लेगी। दिन व्यतीत होते जा रहे थे। गालियाँ तो प्रतिदिन ही सुदर्शना को खाने को मिलती थीं। वह अपनों की गालियों का बुरा नही मानती। अब तो वे लोग उसे मारने भी लगे हैं। जो सुदर्शना की सहनशक्ति के बाहर होता जा रहा है

आज भी सुदर्शना प्रतिदिन की भाँति घर के सारे कार्य करने के पश्चात् सिलाई केन्द्र के लिए निकली ही थी कि घर के बाहर सड़क पर उसका देवर न जाने कहाँ से आया और उसे मारने लगा। वह देवर की मार से बचने का प्रयत्न कर ही रही कि उसकी सासू माँ भी देवर के साथ मिलकर उसको बुरी तरह मारने लगी।

'' तेरे से हम सब कहिन रहैं कि अपने बाप के घर से पचास हजार रूपये लेकर आ। वो तो तुमसे हुआ नही। अब हमारे खानदान में तू कमाने वाली निकली है।'' क्रोध में सुदर्शना की सास बड़बड़ाती जा रही थी, गालियाँ देती जा रही थी तथा सुदर्शना के बाल खींचकर मारती जा रही थी।

पूरे गाँव के सामने स्वंय को पिटता देख सुदर्शना लाज से पानी-पानी हो रही थी। पिटाई से बचने के लिए वह अपनी सास व देवर का हाथ पकड़ने का प्रयत्न कर ही रही थी कि उसका ससुर ब्रजमोहन डंडा लेकर चला आया। डंडे की मार से सुदर्शना गिर पड़ी। सुदर्शना को वही छोड़कर सभी घर चले गये। इतने में सुदर्शना का पति छोटेलाल आया वह भी गिरी-पड़ी सुदर्शना को लात घूसों से मारने लगा।

सुदर्शना मार खाती रही और पीड़ा से चिल्ला-चिल्ला कर आपने माई-बाप को पुकारती रही। पूरा गाँव चारो ओर खड़ा होकर तमाशा देखता रहा था, किन्तु किसी ने भी उन्हें रोकने का साहस न किया। सबके चले जाने के पश्चात् सुदर्शना उठी और सिलाई केन्द्र न जाकर अपनी कोठरी में जाकर रोने लगी। पूरा बदन छिल गया था। डंडे के चोट के चिह्नन से पीठ और कलाईयाँ भर गयी थीं।

सहसा सुदर्शना ने एक साहसिक निर्णय लिया। जो उसकी ससुराल वालों की सोच से परे था। सुदर्शना ने एक कागज़ पर यहाँ के थानेदार के नाम अर्जी लिखी। आज पाँच तक की शिक्षा सुदर्शना के काम आ रही थी। वह सोच रही थी कि उसके माई-बाबू ने यदि उसकी इतनी भी शिक्षा न दिलाई होती तो आज वह अपने लिए इतना भी न सोच पाती। उसने ससुराल वालों पर दहेज के लिए प्रताड़ित करने, मार-पीटकर घर से निकाल देने तथा अपनी सुरक्षा के लिए गुहार लगाते हुए अर्जी लिखी

जिसमें सास-ससुर, देवर रोशनलाल व पति को नामजद किया। दोनों ननदों के नाम उसने छोड़ दिये यह सोच कर कि ये लड़कियाँ हैं। व्याह कर एक दिन इन्हें ससुराल जाना होगा। ससुराल में जीने और गुजर-बसर के मार्ग इतने सरल नही होते। टेढ़ी-मेढ़ी पगडंडियों से गुजरना पड़ता है।

अर्जी लेकर सुदर्शना घर से निकली। सिलाई केन्द्र वाली मैडम जी से चौकी का पता पूछा व डेढ़ कोस पैदल चलकर दूसरे गाँव में बनी एकमात्र पुलिस चैकी पर जा पहुँची। दरोगा जी को उसने अर्जी दी। दरोगा जी को उसने बाहों पर पड़े डंडे के नीले निशान भी दिखाये। दरोगा जी ने उसकी रपट लिखी तथा सब कुछ ठीक करने का आश्वासन देते हुए उसे घर जाने के लिए कहा। घर आकर सुदर्शना कोठरी में लेट गयी। दिन का तीसरा पहर ढल रहा था। शाम होते-होते दरोगा साहब दरवाजे पर आ गये। उस समय सभी घर में थे। उन्होंने कड़कती आवाज में ससुर बृजलाल, देवर रोशनलाल, सास सवितरा तथा उसके पति छोटेलाल को बुलाया। उन्हें कानून की भाषा में समझाया कि तुम लोगों पर दहेज के लिए बहू का उत्पीड़न, मार-पीट, उस पर जानलेवा हमला करने तथा दहेज के लिए घर से बाहर निकालने का प्रमाण साबित हो गया है। तुम लोगों के विरूद्ध रपट लिख ली गयी है। अब तुम सबको जेल जाना पड़ेगा। सुदर्शना ने देखा कि दरोगा की बात सुनते ही उसे सड़क पर डंडे से पीटने वाला व्यक्ति ससुर बृजलाल थर-थर काँपने लगा था।

" माई-बाप, हुजूर......क्षिमा कर दीजिये। दुबारा ऐसी ग़लती न होगी। " कहते हुए बृजलाल दरोगा के पैरों पर गिर पड़ा। पूरा गाँव दरवाजे पर खड़ा आज पुनः इस घर का तमाशा देख रहा था।

" हमें क्षिमा कर दो साब! " गिड़गिड़ाते हुए सुदर्शना की सास ने कहा।

सुदर्शना को गालियाँ देने वाले छोटेलाल व रोशनलाल की तो जैसे बोलती ही बन्द हो गयी थी। सब हाथ जोड़े गिड़गिड़ा रहे थे। वे सुदर्शना से भी गिड़गिड़ाते हुए क्षमा मांग रहे थे। गाँव के लोग सुदर्शना की प्रशंसा कर रहे थे। वे सभी बृजलाल की दबंगई व लालची स्वभाव से परिचित थे। सुदर्शना ने दरोगा जी विनती की कि इस बार वो इन सबको क्षमा कर दें। दरोगा जी ने उनसे शपथ-पत्र लिखवाया कि यदि दुबारा वे ऐसा ग़लती करेंगे तो उन्हें जेल में डाला जायेगा। गाँव वाले आपस में बातें कर रहे थे कि छोटेलाल की बीवी बहुत पढ़ी-लिखी है। सुदर्शना सोच रही थी कि यदि उसे आगे और पढ़ने के अवसर मिलते तो जीवन की राहें और सुगम हो जातीं ।

(लेखिका नीरजा हेमेन्द्र वरिष्ठ लेखिका हैं, आपके चार उपन्यास, लोकप्रिय व बेहद उत्कृष्ट शैली को संजोये सोलह कहानी संग्रह व अनेकों कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं । आपको उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का विजयदेव नारायण साही नामित पुरस्कार, शिंगलू स्मृति सम्मान, फणीश्वरनाथ रेणु स्मृति सम्मान, कमलेश्वर कथा सम्मान, लोकमत पुरस्कार, सेवक साहित्यश्री सम्मान, हाशिये की आवाज़ कथा सम्मान, कथा साहित्य विभूषण सम्मान, अनन्य हिन्दी सहयोगी सम्मान आदि सम्मान व पुरस्कार मिल चुके हैं)